



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-31082020-221452  
CG-DL-E-31082020-221452

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 2609]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 28, 2020/भाद्र 6, 1942

No. 2609]

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 28, 2020/BHADRA 6, 1942

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 अगस्त, 2020

का.आ. 2940(अ).—मंत्रालय की प्रारूप अधिसूचना का.आ. 2905(अ.), दिनांक 9 सितम्बर, 2016, के अधिक्रमण में, अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उपधारा (3) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है को पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में या ई-मेल esz-mef@nic.in पर भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य 75°52'13.6668" पू से 11° 50' 49.8552" उ और 75°56'24.0828" पू से 11° 55' 8.1876" उ के मध्य अरालम वन्यजीव अभयारण्य के दक्षिणी भाग पर स्थित है। यह केरल के कन्नूर जिला के दक्षिणी-पूर्व भाग पर स्थित है, जो कि स्थानिक वनस्पति और जीवजंतु की विविधता के वास को आश्रय प्रदान करता है। अभयारण्य के पारिस्थितिकी, जीवजंतु, वनस्पति, भू-आकृति और मनोरंजात्मक और अनुसंधान या शैक्षिक दृष्टिकोण से कई महत्वपूर्ण मूल्य हैं। अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल 30.3798 वर्ग किलोमीटर है;

और, कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के मूल्य जैवविविधता समृद्ध, आर्थिक लाभ, संस्कृति, जलसंभर और जलग्रहण क्षेत्र, मानव पारिस्थितिकी, सौंदर्य महत्त्व, वैज्ञानिक अध्ययन के लिए क्षमता, शिक्षा और जागरूकता, आदि से संबंधित है।

अरालम वन्यजीव अभयारण्य के उत्तर में और वॉयनाड उत्तर वन संभाग में समीपवर्ती क्षेत्रों के साथ कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के वन अद्वितीय वनस्पति अर्थात् केरल में *डिप्टेरोकार्पस मेसुआ-पालाक्युम* से संबंधित वनस्पति के एकमात्र सघन संरक्षित पैच का प्रतिनिधित्व करते हैं। क्षेत्र की इडाफिक स्थितियां दक्षिणी पहुंच से अलग है;

और, कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य में महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों में कुन्निवाका (*अल्बिजिया प्रोसेरा*), एज़िलम्पाला (*अल्स्टोनिया स्कॉलरिस*), कसुमावु (*आनाकाडियम ऑस्किडेल*), चेमपारावाल्ली (*अमपेलोकिस्सूस इंडिका*), मुला (*बम्बूसा बम्बूसा*), मुल्लुवेनगा (*ब्रिडेलिया रेडसा*), पेहेजू (*केरिया अरबोरिया*), कनिकोन्ना (*कैसिया फिस्टुला*), कोडांगाल (*कैटेल्ला असिअटिका*), ईट्टी (*डालबर्गिया लेटिफोलिया*), अरसु (*फिकस रेलिगिओसा*), कुडमपुली (*गार्सिनीगुम्मी-गुट्टा*), चडाची (*प्रेविया टिल्लिफोलिया*), मन्जाकदम्बु (*हल्दीना कॉर्डिफोलिया*), अरिप्पु (*लैटाना कैमारा*), वैथेक्कु (*लार्गैस्टोमिया लरंकेओलाटा*), कडमवु (*मित्रागयान परविफोलिया*), मावु (*मंगिफेरा इंडिका*), निकम्बागम (*परूनस सीलोनिका*), मझहावाका (*समानिअसामान स्या*), टेक (*टेकटोना ग्रांडिस*), मारुथ (*टर्मिनलिया पानिकुलाटा*), मायलेल्लु (*विटेक्स अलटिसिमा*), कोट्टा (*जिजिफस क्यलोपरुस*), आदि उपलब्ध हैं;

और, कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य समीपवर्ती वॉयनाड उत्तर वन संभाग और इसके अतिरिक्त निकटस्थ वॉयनाड ब्रह्मगिरि और वॉयनाड उत्तरी ढलानों के साथ आगे तक फैले वनों का सन्निहित खंड है। वन, केरल में अरालम वन्यजीव अभयारण्य जैसे संरक्षित क्षेत्रों के साथ भी समीपवर्ती है जो कर्नाटक में ब्रह्मगिरि वन्यजीव अभयारण्य और कूर्म के वनों के समीपस्थ है और विशेष रूप से बड़े-बड़े स्तनधारियों जैसे गौर, हाथी, बाघ और स्थानिक प्राइमेट जैसे शेर-टैल्ड मैकाक, नीलगिरि लंगूर और पक्षियों जैसे मालाबार पाइड-धनेश और ग्रेट पाइड धनेश के विषय के संबंध मेंटा-जनसंख्या प्रबंधन में अधिक महत्त्व रखते हैं;

और, अपने स्थानीय पारिस्थितिकीय महत्त्व के साथ कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के वन स्थानिक प्रजातियों की विविधता को आश्रय प्रदान करते हैं जो विलुप्त होने के कगार पर हैं। अभयारण्य की एक अन्य अद्भुत विशेषता है, कि यहाँ दिनचर प्राइमेट जैसे सिंह टैल्ड मकाका (*मकाका सिलेनस*), नीलगिरि लंगूर (*सेमनोपिथेकस जोहनि*), लघु पुच्छ वानर (*मकाका रदियता*) की तीन प्रजातियां और रात्रीचर प्राइमेट जैसे मालाबार तवांगु (*लोरिस लेडेक्केरिअनस मालाबारिकस*) की एक प्रजाति विद्यमान है। कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य में स्तनधारियों की 41 प्रजातियों (पश्चिमी घाटों की 5 स्थानिक शामिल), पक्षियों की 179 प्रजातियों (पश्चिमी घाटों की 5% स्थानिक प्रजाति के साथ), सरीसृपों की 36 प्रजातियों, उभयचरों की 23 प्रजातियों, मछलियों की 29 प्रजातियों और तितलियों की 216 प्रजातियों का वास है;

और, कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य वन्यजीवों की विशिष्ट विविधता के वास के लिए जाना जाता है। अभयारण्य में मुख्य प्रजातियां एशियाई हाथी (*एलिफस मैक्सिमस*), बाघ (*पैंथेरा टिगरिस*), तेंदुआ (*पेन्थेरा प्रड्यूस*), चित्तीदार हिरण (*मुतिअकस मुतजक*), पिसूरी (*टरागुलस मेमिन्ना*), सांभर हिरण (*रूसा यूनिर्कालर*), वनबिलार (*फेलिस चाउस*), लघु पुच्छ वानर (*मकाका रदियता*), जंगल पाल्म गिलहरी (*फुनामबुलुस ट्रिस्टीटस*), मालाबार बृहत गिलहरी (*रतुफा इंडिका*), तवांगु (*लोरिस टरडिग्राडस*), भारतीय क्रेस्टेड साही (*हिस्ट्रिक्स इंडिका*), ब्लैक नेप्पेड खरगोश (*लेपुस निगारिकोल्लिस*), लेस्सेर डॉग फेकड फ्रूट बैट (*कीनोप्टेरुस ब्राचोटिस*), भारतीय साल (*मानिस क्रैसिकाउडाटा*), ग्रे नेवला (*हर्पेस्टेस एडवर्डसी*), छोटा भारतीय सिविट (*विवेरिकुला इंडिका*), वनैला सूअर (*सस स्क्रोफ़ा*), आदि पाई जाती हैं;

और, अभयारण्य में मुख्य पक्षियों में मालाबार चितकबरी धनेश (*अंधराकोकेरोस कोरोनाटस*), ग्रे जंगली मुरगी (*गल्लुस सोब्रेराटी*), शिकरा (*एकिपीटर बाडिउस*), भारतीय कोयल (*कुकुलस माइक्रोपेटरस*), श्री लंका फ्रोगमाउथ (*बत्राचोस्तोमस मोनिलिगर*), ब्राह्मणी काइट (*हालिस्तुर इंडस*), ग्रीन इम्पेरिअल-कबूतर (*इकुला अइनिया*), एशियन कोयल (*यूडोनाइंडसकोलोपाकेया स्या*), ग्रे बगुला (*अरदेया किनेरिया*), मालाबार ट्रोगोन (*हारपेक्टेस फस्किअतुस*), ब्लैक काइट (*मिलवउस मिगरांस*), मालाबार पैराकीट (*पस्ट्राकुला कोलुम्बोइडेस*), मालाबार ग्रे धनेश (*ओक्यकेरोसगारिसेउस*), ग्रेट धनेश (*बुकेरोस बिकोरनिस*), ब्लैक डोंगो (*डिक्रस मारोकेरकस*), मालाबार पिट विपर (*टरिमेरेउसरूस मालाबारिकस*), कोबरा (*नाजा नाजा*), किंग कोबरा (*ओपहीओफगस हन्नह*), भारतीय पायथन (*पायथन मोलुरुस*), भारतीय रेट स्लेक (*पतया मुकोसुस*), नीलगिरि कीलबैक (*हेबिउस वेडुमिड*), सामान्य भारतीय मॉनीटर (*वारानुस बेंधालेसिस*), माउंटेन डेय छिपकली (*कनेमास्पिस मॉटिकोला*), नेरो-माऊथड मेढक (*मिकरोहयला स्या*), ओरनोटे नेरो-माऊथड मेढक (*मिकरोहयला ओरनेट*), जेडोन नेरोमाऊथड मेढक (*रामानेल्ला मॉटोना*), सामान्य भारतीय टोड (*डुट्टाफरयनुस मेलानोस्टीकटस*), मालाबार ट्री टोड (*पेडोस्टीवेस तुबेरकुलोसुस*), भारतीय मेढक (*इंडिराना स्या*), गोल्डन मेढक (*हयलाराना ऑरॉटिका*), आदि उपलब्ध हैं;

और, कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैराग्राफ 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय और जैव-विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को निषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) (जिसे इसमें इसके पश्चात् पर्यावरण अधिनियम कहा गया है) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) एवं उपधारा (3) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केरल राज्य के कन्नूर जिला के कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 0 (शून्य) से 2.1 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

1. पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमा.- (1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 0 (शून्य) से 2.1 किलोमीटर तक विस्तृत है और पारिस्थितिकी संवेदी जोन का

क्षेत्रफल 12.91 वर्ग किलोमीटर है। विभिन्न दिशाओं में पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार निम्न रूप से दिया गया है:—

दिशा	विस्तार (किलोमीटर)
उत्तर	0 किलोमीटर
उत्तर - पूर्व	2.1 किलोमीटर
पूर्व	1 किलोमीटर
दक्षिण-पूर्व	1 किलोमीटर
दक्षिण	1 किलोमीटर
दक्षिण-पश्चिम	1 किलोमीटर
पश्चिम	0 किलोमीटर
उत्तर-पश्चिम	0 किलोमीटर

केरल के अरालम वन्यजीव अभयारण्य के साथ सीमांकन के कारण कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के उत्तर, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम भागों की ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन का शून्य विस्तार है।

- (2) कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **अनुलग्नक -I** के रूप में संलग्न है।
- (3) सीमा विवरण और अक्षांश और देशांतर के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन को सीमांकित करते हुए कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के मानचित्र **अनुलग्नक -IIक, अनुलग्नक -IIख और अनुलग्नक-IIग** के रूप में संलग्न है।
- (4) कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य और पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा के भू-निर्देशांकों की सूची **अनुलग्नक -III** की सारणी **क** और सारणी **ख** में दी गई है।
- (5) मुख्य बिंदुओं के भू-निर्देशांकों के साथ प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **अनुलग्नक -IV** के रूप में संलग्न है।

**2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना.**—(1) राज्य सरकार, द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजन के लिए, राजपत्र में अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए, राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ एक आंचलिक महायोजना बनाई जायेगी।

(2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट रीति से तथा प्रासंगिक केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरूप तथा केंद्रीय सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों, यदि कोई हों, के अनुसार बनायी जाएगी।

(3) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरण संबंधी सरोकारों को शामिल करने के लिए इसे राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से बनाया जाएगा, अर्थात्:-

- (i) पर्यावरण;
- (ii) वन और वन्यजीव;
- (iii) कृषि;
- (iv) राजस्व;
- (v) शहरी विकास;
- (vi) पर्यटन;
- (vii) ग्रामीण विकास;
- (viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;
- (ix) नगरपालिका;
- (x) पंचायती राज;
- (xi) स्थानीय स्वशासन विभाग (एलएसजीडी);
- (xii) केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड; और
- (xiii) लोक निर्माण विभाग।

(4) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों में सुधार करके उन्हें अधिक दक्ष और पारिस्थितिकी-अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।

(5) आंचलिक महायोजना में वनरहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, जलग्रहण क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नमी के संरक्षण, स्थानीय जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलुओं की व्यवस्था की जाएगी जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

(6) आंचलिक महायोजना में सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों एवं शहरी बस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा का सहायक मानचित्र के साथ निर्धारण किया जाएगा और मौजूदा और प्रस्तावित भू-उपयोग की विशेषताओं का ब्यौरा भी दिया जाएगा।

(7) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में होने वाले विकास का विनियमन किया जाएगा और सारणी में यथासूचीबद्ध पैराग्राफ 4 में निषिद्ध एवं विनियमित क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा। इसमें स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय एवं संवर्धन किया जाएगा।

(8) आंचलिक महायोजना, क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।

(9) अनुमोदित आंचलिक महायोजना, निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

**3. राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.-** राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) **भू-उपयोग.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के लिए चिन्हित उद्यानों और खुले स्थानों का वृहद वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क), में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, मानीटरी समिति की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा जैसे:-

(i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का निर्माण करना;

(ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;

(iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;

(iv) कुटीर उद्योग एवं ग्राम उद्योग; पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक सुविधा भण्डार, और स्थानीय सुविधाएं तथा गृह वास; और

(v) पैराग्राफ-4 में उल्लिखित बढ़ावा दिए गए क्रियाकलाप:

परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना तथा राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों एवं संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों तथा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी आता है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, मानीटरी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि को सुधारने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा।

(ख) अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुनः वनीकरण तथा पर्यावासों की बहाली के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोत.-** सभी प्राकृतिक जलमार्गों के जलग्रहण क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और आंचलिक महायोजना में उनके संरक्षण और बहाली की योजना सम्मिलित की जाएगी और राज्य सरकार द्वारा दिशा-निर्देश इस रीति से तैयार किए जाएंगे कि उसमें ऐसे क्षेत्रों में या उसके पास विकास क्रियाकलापों को निषिद्ध और निर्बंधित किया गया हो।

(3) **पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन संबंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार अनुज्ञात होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य सरकार के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से पर्यटन विभाग द्वारा बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की बहन क्षमता के आधार पर तैयार की जायेगी।

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित किए जाएंगे, अर्थात्:-

(i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिजॉर्ट का नया सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु यह, पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक पूर्व परिभाषित और अभीहित क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार, नए होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुज्ञात होगी;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रिया-कलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार, केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी दिशानिर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल-विशिष्ट संवीक्षा तथा मानीटरी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए होटल/ रिजॉर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं होगा।

(4) **प्राकृतिक विरासत.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झरने, दर्रे, उपवन, गुफाएँ, स्थल, वनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी और उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कलाकृति-क्षेत्रों तथा ऐतिहासिक, स्थापत्य संबंधी, सौंदर्यात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण.**- पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण को रोकथाम और नियंत्रण किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(8) **बहिस्त्राव का निस्सरण.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्त्राव का निस्सरण, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सरण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.**- ठोस अपशिष्ट का निपटान एवं प्रबन्धन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा। अकार्बनिक पदार्थों का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों (ईएसएम) का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जायेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**- जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जायेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना

सं.सा.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(13) ई-अपशिष्ट.- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) सड़क-यातायात.- सड़क-यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे। आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार सड़क-यातायात के अनुपालन की मानीटरी करेगी।

(15) वाहन जनित प्रदूषण.- वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा। स्वच्छतर ईंधन के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) औद्योगिक ईकाइयां.- (i) सरकारी राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख को या उसके बाद पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए प्रदूषणकारी उद्योग की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी।

(ii) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना अनुज्ञात होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) पहाड़ी ढलानों का संरक्षण.- पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी;

(ख) जिन ढलानों या विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों में अत्यधिक भू-क्षरण होता है उनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के उपबंधों जिसमें तटीय विनियमन जोन अधिसूचना, 2011 एवं पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 शामिल है सहित वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) अन्य लागू नियमों तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात्:-

#### सारणी

क्रम सं. (1)	क्रियाकलाप (2)	टिप्पणी (3)
<b>क. निषिद्ध क्रियाकलाप</b>		
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और क्रशिंग इकाइयां।	(क) वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें निजी उपयोग के लिए मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना और मकान बनाने और व्यक्तिगत उपभोग के लिए देशी टाइल्स या ईंटों का निर्माण करना भी सम्मिलित है, के सिवाय सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर की खानें और उनको तोड़ने की इकाइयां तत्काल प्रभाव से निषिद्ध होगी; (ख) खनन संक्रियाएं, माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौडाबर्मन थिरुमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में आदेश तारीख 4 अगस्त, 2006 और 2012 की रिट याचिका (सी) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में प्रचालित की जाएंगी।
2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि, आदि) उत्पन्न करने वाले उद्योगों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुमति नहीं होगी: जब तक कि इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में फरवरी, 2016, में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा।
3.	बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं की	लागू विधियों के अनुसार निषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।

	स्थापना।	
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	लागू विधियों के अनुसार निषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिष्वावों का निस्सरण।	लागू विधियों के अनुसार निषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा।
7.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	लागू विधियों के अनुसार निषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
<b>ख. विनियमित क्रियाकलाप</b>		
8.	होटलों और रिसोर्टों की वाणिज्यिक स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण के सिवाय, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी:  परंतु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, पर्यटन महायोजना और लागू दिशानिर्देशों के अनुसार सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार करने की अनुज्ञा होगी।
9.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार का वाणिज्यिक संनिर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:  परंतु स्थानीय लोगों को पैराग्राफ 3 के उप पैराग्राफ (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित उनके उपयोग के लिए उनकी भूमि में स्थानीय निवासियों की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने लिए संनिर्माण करने की अनुमति भवन उपविधियों के अनुसार दी जाएगी।  परन्तु ऐसे लघु उद्योगों जो प्रदूषण उत्पन्न नहीं करते हैं, से संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप विनियमित किए जाएंगे और लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से ही न्यूनतम पर रखे जाएंगे।  (ख) एक किलोमीटर से आगे आंचलिक महायोजना की अनुसार विनियमित होंगे।
10.	गैर प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग तथा अपरिसंकटमय लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, बागबानी या कृषि आधारित उद्योग, जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्रियों से उत्पाद बनाते हैं, सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
11.	वृक्षों की कटाई।	(क) राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन भूमि या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई नहीं होगी।  (ख) वृक्षों की कटाई केंद्रीय या संबंधित राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार विनियमित होगी।
12.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
13.	विद्युत और संचार टॉवर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा (भूमिगत केवल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा)।
14.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी	लागू विधियों नियमों और विनियमनों और उपलब्ध दिशानिर्देशों के

	ढाँचा।	अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
15.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों नियमों और विनियमनों और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
16.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से गर्म वायु के गुब्बारे, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स उड़ाना आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
17.	पहाड़ी ढलानों और नदी तटों का संरक्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
18.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा।
19.	स्थानीय जनता द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागवानी पद्धतियों के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्स्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुज्ञात होंगे।
20.	फार्मों, कारपोरेट, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुक्कुट फार्मों की स्थापना।	स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लागू विधियों के अधीन विनियमित (अन्यथा प्रदान किए गए) होंगे।
21.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सरण।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह के निस्सरण से बचा जाएगा। उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण और पुनःउपयोग के प्रयास किए जाएंगे अन्यथा उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सरण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
22.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक प्रयोग एवं निष्कर्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
23.	टोस अपशिष्ट निपटान स्थल और टोस और जैव चिकित्सा अपशिष्ट के लिए सामान्य जलाए जाने की सुविधा की स्थापना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
24.	टोस अपशिष्ट का प्रबंधन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
25.	कृषि और अन्य उपयोग के लिए खुले कुआ, बोर कुआ, आदि।	विनियमित और सम्बद्ध प्राधिकारी द्वारा क्रियाकलापों की सख्त निगरानी।
26.	विदेशी प्रजातियों को लाना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
27.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
28.	पोलिथीन बैगों का प्रयोग।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
29.	वाणिज्यिक संकेत बोर्ड और होर्डिंग का प्रयोग।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
<b>ग.संबंधित क्रियाकलाप</b>		
30.	वर्षा जल संचय।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।



	उद्योग।	
34.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग।	बायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	कृषि वानिकी।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
37.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	कौशल विकास।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
39.	अवक्रमित भूमि/वनों/ पर्यावासों की बहाली।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
40.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

**5. पारिस्थितिकी-संवेदी जोन अधिसूचना की निगरानी के लिए निगरानी समिति.-** पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) के तहत इस अधिसूचना के उपबंधों की प्रभावी निगरानी के लिए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा एक निगरानी समिति का गठन करेगी जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात्:

क्र.सं.	निगरानी समिति का गठन	पद
(i)	जिला कलेक्टर कन्नूर या उनके प्रतिनिधि	पदेन, अध्यक्ष;
(ii)	जिला कलेक्टर वॉयनाड के प्रतिनिधि	सदस्य;
(iii)	विधान सभा के सदस्य (एमएलए), पैरावूर	सदस्य;
(iv)	जिला पंचायत अध्यक्ष, कन्नूर	सदस्य;
(v)	पर्यावरण विभाग, केरल सरकार का प्रतिनिधि	सदस्य;
(vi)	केरल सरकार द्वारा नामित प्राकृतिक संरक्षण (विरासत संरक्षण सहित) के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि	सदस्य;
(vii)	केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जिला अधिकारी, कन्नूर	सदस्य;
(viii)	सदस्य राज्य जैव विविधता बोर्ड	सदस्य;
(ix)	वन्यजीव वार्डन, अरालम	सदस्य- सचिव।

**6. विचारार्थ विषय:-** (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।

(2) निगरानी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष तक या राज्य सरकार द्वारा नई समिति का पुनर्गठन किए जाने तक होगा और इसके बाद निगरानी समिति राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।

(3) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित और पारिस्थितिकीय संवेदी जोन में आने वाले क्रियाकलापों और इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट निषिद्ध गतिविधियों के सिवाय आने वाले ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति लेने के लिए केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट की जाएगी।

(4) इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट निषिद्ध क्रियाकलापों के सिवाय, भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अधिसूचना के अनुसूची के अधीन ऐसे क्रियाकलापों, जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है, परंतु जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उसे संबद्ध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबद्ध उपायुक्त या संबंधित उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण अधिनियम की धारा 19 के अधीन परिवाद दायर करने के लिए सक्षम होगा।

(6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को, प्रत्येक मामले में आवश्यकता के अनुसार, अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।

- (7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को, **अनुलग्नक V** में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।
- (8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।
7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।
8. इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अध्याधीन होंगे।

[फा. सं. 25/101/2015-ई एस जेड-आर ई]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

## अनुलग्नक- I

## क. केरल राज्य में कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा का विवरण

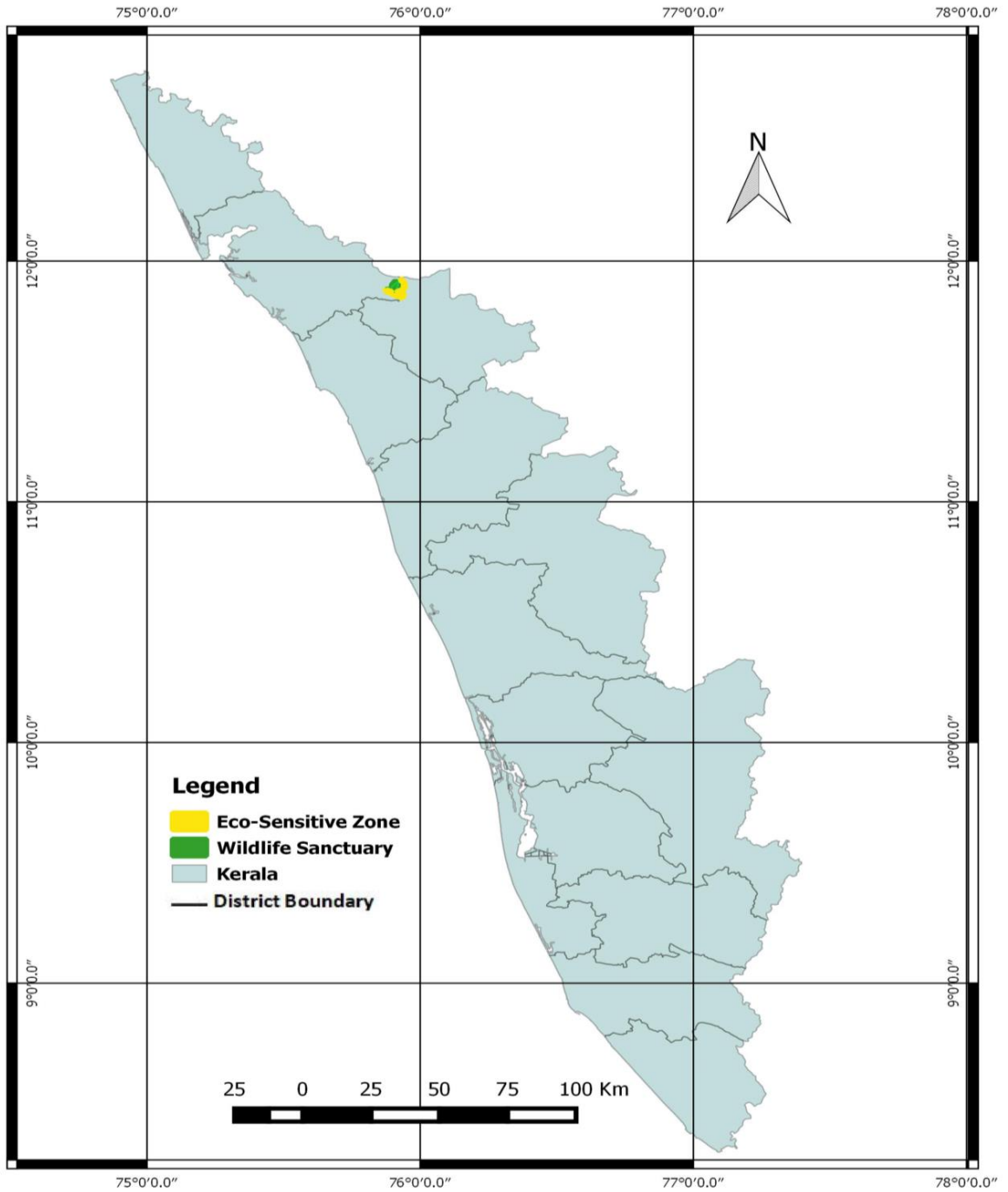
पूर्व	कोट्टीयूर और पहाड़ी डले रिज़र्व वन के पूर्वी मुख्य सामान्य बिंदु से आरंभ होती है इसके बाद कोट्टीयूर रिज़र्व वन के साथ साथ कोट्टीयूर रिज़र्व वन की पूर्वी सीमा से दक्षिणी-पूर्व कोण तक दक्षिण की ओर जाती है।
दक्षिण	कोट्टीयूर रिज़र्व वन की दक्षिणी सीमा है।
पश्चिम	सागौन और स्फॉटवुड बगान को अलग करके कोट्टीयूर रिज़र्व वन की पश्चिमी सीमा के साथ उस बिंदु तक जाती है जहां यह अरालम वन्यजीव अभयारण्य से मिलती है इसके बाद 1374 मीटर ऊंचाई में शीर्ष बिंदु तक अरालम वन्यजीव अभयारण्य की पूर्वी सीमा के साथ जाती है।
उत्तर	इसके बाद पूर्वी अरालम वन्यजीव अभयारण्य की दक्षिणी सीमा के साथ उस बिंदु तक जाती है जहां यह पहाड़ी डले रिज़र्व वन से मिलती है इसके बाद कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य और पहाड़ी डले रिज़र्व वन की सामान्य सीमा के साथ जाकर आरंभिक बिंदु तक पहुंचती है।

## ख: केरल राज्य में कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

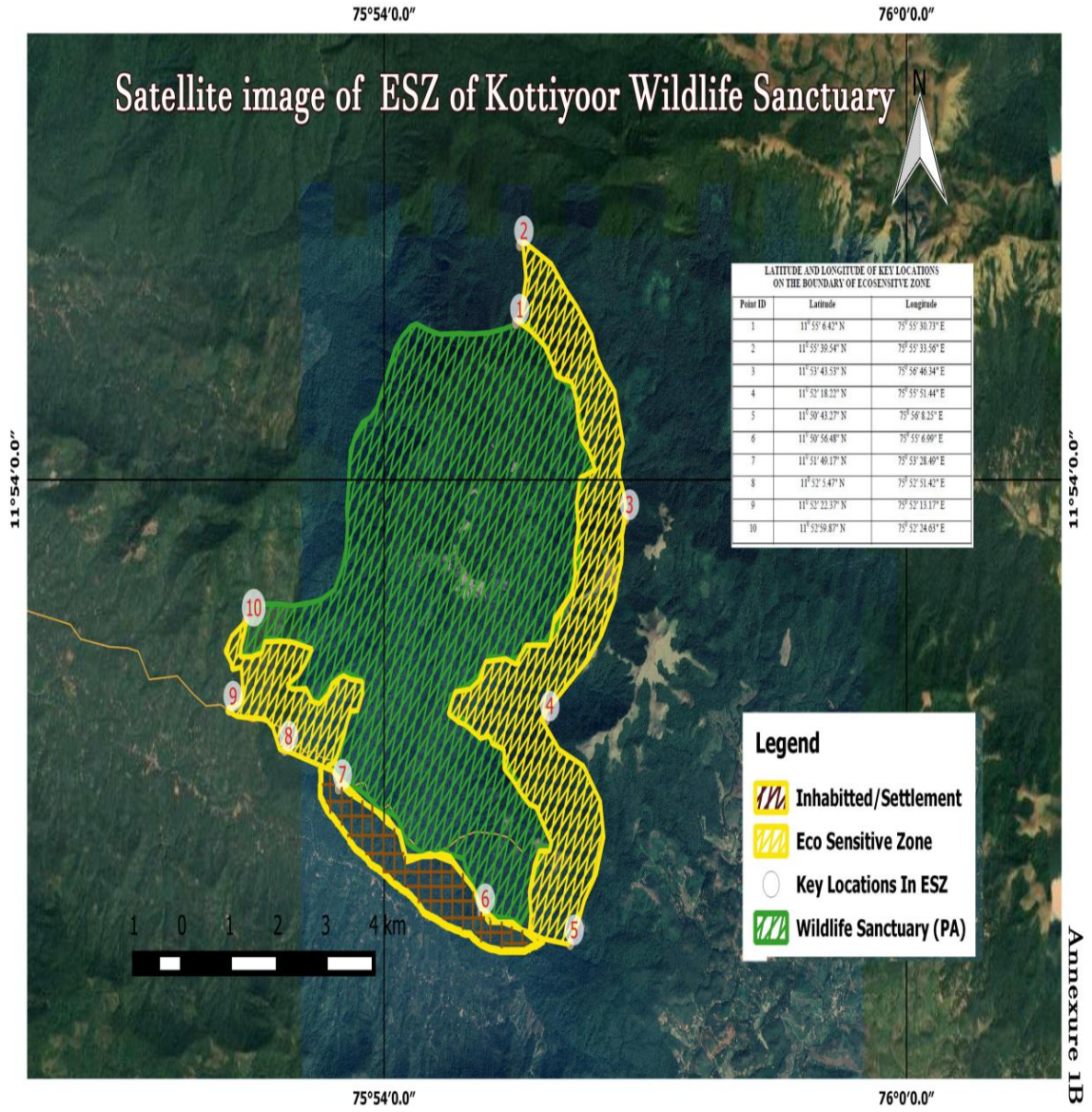
उत्तर	उत्तर की ओर अरालम वन्यजीव अभयारण्य है। लगभग 3 किलोमीटर (11°54'38.89"उ, 75°54'0.14"पू - 11°55'6.81"उ, 75°55'31.91"पू) के लिए अरालम वन्यजीव अभयारण्य और कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन की चौड़ाई शून्य है।
उत्तर-पूर्व	उस बिंदु से आरंभ होता है जहां कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य अरालम वन्यजीव अभयारण्य से मिलती है और 2.1 किलोमीटर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की चौड़ाई के साथ लगभग 2 किलोमीटर के लिए उत्तर वायनाड के पहाड़ी रिज़र्व वन और रिज़र्व वनों की सीमा के साथ मुड़ती है।
पूर्व	पूर्वी भाग 3.5 किलोमीटर के आसपास उत्तर वायनाड के रिज़र्व वनों के साथ संरक्षित क्षेत्र सीमा के साथ मुड़ती है जब तक यह अभयारण्य के इराट्टामुडी क्षेत्र के निकट पहुंचती है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन की चौड़ाई यहां 1 किलोमीटर है।
दक्षिण-पूर्व	इराट्टामुडी क्षेत्र से पारिस्थितिकी संवेदी जोन 1 किलोमीटर की चौड़ाई के साथ कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के दक्षिणी बिंदु तक व्याप्त है।
दक्षिण	पारिस्थितिकी संवेदी जोन की 1 किलोमीटर (11°50'36.74"उ, 75°54'44.94"पू-11°51'38.65"उ, 75°52'39.29"पू) की चौड़ाई के साथ 4.26 किलोमीटर के लिए मेलेपलचुरम से थल्ले अम्बायाथोडु तक बवलीपुझा के साथ दक्षिणी भाग।
दक्षिण-पश्चिम	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के 1 किलोमीटर की चौड़ाई के साथ कंडापुनम से पत्नीयामाल तक 3.150 किलोमीटर की दूरी तक सागौन और स्फॉटवुड बगान का विस्तार 137 हेक्टेयर है।
पश्चिम	11°53'23.05"उ, 75°53'32.44"पू में अरालम वन्यजीव अभयारण्य की चावाची भाग की सीमा से आरंभ होती है और 1 किलोमीटर तक विस्तृत है यह दोनों अभयारण्य की साझी सीमा के साथ 11°53'53.07"उ, 75°53'37.55"पू तक है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन की चौड़ाई यहां शून्य है।
उत्तर-पश्चिम	यह भाग 1.6 किलोमीटर के लिए अरालम वन्यजीव अभयारण्य के चावाची भाग की सीमा के साथ जाता है जहां पारिस्थितिकी संवेदी जोन की चौड़ाई शून्य (11°53'53.07"उ, 75°53'37.55"पू - 11°54'38.89"उ, 75°54'0.14"पू) है।

## अनुलग्नक- IIक

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का अवस्थान मानचित्र



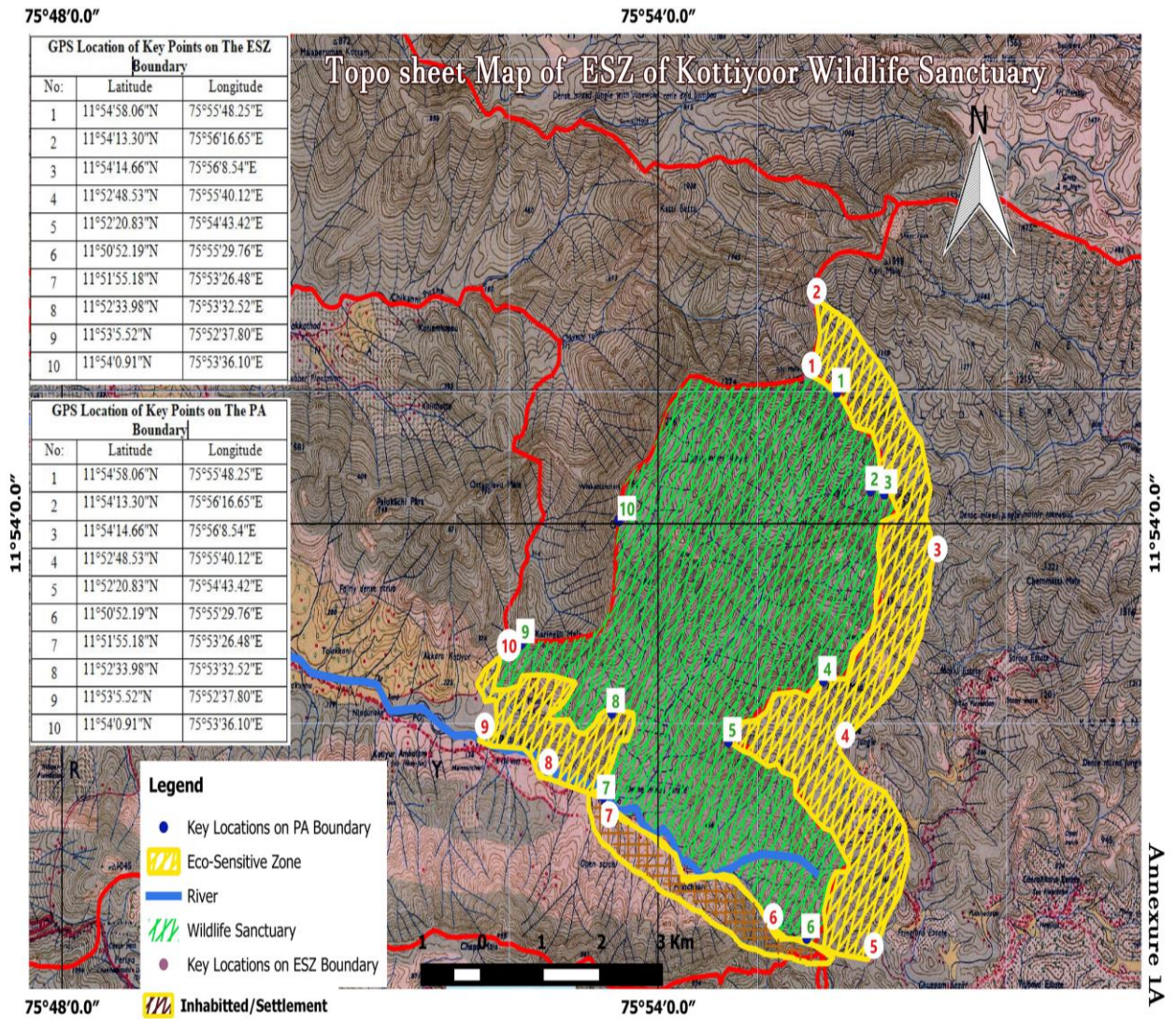
मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल मानचित्र





अनुलग्नक - IIग

भारतीय सर्वेक्षण (एसओआई) टोपोशीट पर मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ कोट्टियूर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



## अनुलग्नक -III

## सारणी क : कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

क्र.सं.	नाम	दिशा	अक्षांश	देशांतर
1	इथीमाला	उत्तर	11°54'58.06"उ	75°55'48.25"पू
2	सूर्यामुडी	उत्तर पूर्व	11°54'13.30"उ	75°56'16.65"पू
3	सूर्यामुडी 2	उत्तर पूर्व	11°54'14.66"उ	75°56'8.54"पू
4	इराट्टामुडी	पूर्व	11°52'48.53"उ	75°55'40.12"पू
5	चेरीमुडी	दक्षिण पूर्व	11°52'20.83"उ	75°54'43.42"पू
6	मेले पालचुराम	दक्षिण पूर्व	11°50'36.74"उ	75°54'44.94"पू
7	थाझे अम्बायाथोडे	दक्षिण	11°51'38.65"उ	75°52'39.29"पू
8	अंजीली मुरीचिदम मेले	दक्षिण पश्चिम	11°53'5.52"उ	75°52'37.80"पू
9	कोट्टीयूर चावाची सीमा	पश्चिम	11°54'0.91"उ	75°53'36.10"पू

## सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

क्र.सं.	नाम	दिशा	अक्षांश	देशांतर
1	इथीमाला	उत्तर	11°55'6.42"उ	75°55'30.73"पू
2	अम्बालाप्यारा ट्रेकपथ	उत्तर	11°55'39.54"उ	75°55'33.56"पू
3	सूर्यामुडी के नीचे	पूर्व	11°53'43.53"उ	75°56'46.34"पू
4	चेरीमुडी के नीचे	दक्षिण पूर्व	11°52'18.22"उ	75°55'51.44"पू
5	वालद मेले कादु	दक्षिण पूर्व	11°50'43.27"उ	75°56'8.25"पू
6	मेलेपल्लुराम	दक्षिण पूर्व	11°50'23.39"उ	75°55'17.69"पू
7	अम्बायाथोडे	दक्षिण	11°51'49.17"उ	75°53'28.49"पू
8	फेंसिंग	दक्षिण पश्चिम	11°52'5.47"उ	75°52'51.42"पू
9	कोट्टीयूर मंदिर के निकट	दक्षिण पश्चिम	11°52'22.37"उ	75°52'13.17"पू
10	अंजीली मुरीचिदम	दक्षिण पश्चिम	11°52'59.87"उ	75°52'24.63"पू

## अनुलग्नक -IV

भू-निर्देशांको के साथ कोट्टीयूर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची

क्र.सं.	नाम	तालुक	जिला	अक्षांश	देशांतर
1	कोट्टीयूर	थालास्सेरी	कन्नूर	11°51'19.85"उ	75°54'14.05"पू
2	केलाकम	थालास्सेरी	कन्नूर	11°52'43.29"उ	75°52'10.91"पू
3	थिरुनेल्ली	मननथावादी	वाँयनाड	11°55'15.12"उ	75°56'13.54"पू



**की गई कार्रवाई सम्बन्धी रिपोर्ट का प्रपत्र:**

1. बैठकों की संख्या और तारीख ।
2. बैठकों का कार्यवृत्त : (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का वर्णन करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक अनुलग्नक में प्रस्तुत करें) ।
3. पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति ।
4. भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सार (पारिस्थितिकी-संवेदी जोन वार) । विवरण अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें।
5. पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार।(विवरण एक पृथक अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें)।
6. पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार । (विवरण एक पृथक अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें)।
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।
8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला ।

**MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE****NOTIFICATION**

New Delhi, the 24th August, 2020

**S.O. 2940(E).**—In supersession of Ministry's draft notification S.O. 2905 (E), dated 9<sup>th</sup> September, 2016, the following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110 003, or send it to the e-mail address of the Ministry at [esz-mef@nic.in](mailto:esz-mef@nic.in)

**Draft Notification**

**WHEREAS**, the Kottiyoor Wildlife Sanctuary is lies between 75°52'13.6668" E to 11° 50' 49.8552" N and 75°56'24.0828" E to 11° 55' 8.1876" N located on the southern side of Aralam Wildlife Sanctuary. It is located on the south-east part of Kannur District of Kerala, which provides home to a variety of endemic flora and fauna. The Sanctuary has several important values from ecological, faunal, floral, geomorphologic and recreational and research or educational perspective. The total area of the Sanctuary is 30.3798 square kilometers;

**AND WHEREAS**, the values of Kottiyoor Wildlife Sanctuary are related to biodiversity richness, economic benefits, culture, watershed and catchment, human ecology, aesthetic significance, potential for scientific studies, education and awareness, etc. Forests of Kottiyoor Wildlife Sanctuary with Aralam Wildlife Sanctuary on its north and adjacent areas in Wayanad North Forest Division represent the only compact protected patch of vegetation belonging to the unique vegetation viz; the *Dipterocarpus-mesua-palaquium* sub-type in Kerala. The edaphic conditions of the region are distinct from those of the southern reaches;

**AND WHEREAS**, Kottiyoor Wildlife Sanctuary consists of important tree species available in the Sanctuary are kunnivaka (*Albizia procera*), ezhilampaala (*Alstonia scholaris*), kasumavu (*Aanacardium*

*occidentale*), chemparavalli (*Ampelocissus indica*), mula (*Bamboosa bamboos*), mulluvenga (*Bridelia retusa*), pezhu (*Carreya arborea*), kanikonna (*Cassia fistula*), kodangal (*Centella asiatica*), eetti (*Dalbergia latifolia*), arasu (*Ficus religiosa*), kudampuli (*Garciniagummi-gutta*), chadachi (*Grewia tiliifolia*), manjakadambu (*Haldina cordifolia*), arippu (*Lantana camara*), venthekku (*Largerstomia lanceolata*), kadambu (*Mitragyna parvifolia*), maavu (*Mangifera indica*), naikambagam (*Prunus ceylanica*), mazhavaaka (*Samaniasaman* spp), teak (*Tectona grandis*), maruth (*Terminalia paniculata*), mylellu (*Vitex altissima*), kotta (*Ziziphus xylopyrus*), etc;

**AND WHEREAS**, Kottiyoor Wildlife Sanctuary is a contiguous block of forests stretching to the adjacent Wayanad North Forest Division and further contiguity with Wayanad-Brahmagiri and Wayanad northern slopes. The forests are also contiguous with the protected areas such as Aralam Wildlife Sanctuary in Kerala which is contiguous to Brahmagiri Wildlife Sanctuary in Karnataka and the forests of Coorg and assume much importance in meta-population management especially with regard to the case of larger mammals such as gaur, elephant, tiger and endemic primates such as lion-tailed macaque, Nilgiri langur and birds such as Malabar pied hornbill and great pied hornbill;

**AND WHEREAS**, the forests of Kottiyoor Wildlife Sanctuary with its local specialized ecological niche support a variety of endemic species which are on the verge of extinction. Another unique feature of the sanctuary is the presence of 3 species of diurnal primates' viz. lion-tailed macaque (*Macaca silenus*), Nilgiri langur (*Semnopithecus johnii*), bonnet macaque (*Macaca radiata*) and one species of nocturnal primate viz., Malabar slender loris (*Loris ledekkerianus malabaricus*). Kottiyoor Wildlife Sanctuary is abode of 41 species of mammals (including 5 endemics to Western Ghats), 179 species of birds (with 5% endemic species to Western Ghats), 36 species of reptiles, 23 species of amphibians, 29 species of fishes and 216 species of butterflies;

**AND WHEREAS**, Kottiyoor Wildlife Sanctuary is known to harbor an exceptional varieties of wildlife. The main species found in the Sanctuary are Asian elephant (*Elephas maximus*), tiger (*Panthera tigris*), leopard (*Panthera pardus*), barking deer (*Muntiacus muntjak*), mouse deer (*Tragulus meminna*), sambar deer (*Rusa unicolor*), jungle cat (*Felis chaus*), bonnet macaque (*Macaca radiata*), jungle palm squirrel (*Funambulus tristriatus*), Malabar giant squirrel (*Ratufa indica*), slender loris (*Loris tardigradus*), Indian crested porcupine (*Hystrix indica*), black napped hare (*Lepus nigricollis*), lesser dog faced fruit bat (*Cynopterus brachyotis*), Indian pangolin (*Manis crassicaudata*), grey mongoose (*Herpestes edwardsi*), small Indian civet (*Viverricula indica*), wild boar (*Sus scrofa*), etc;

**AND WHEREAS**, major avifauna available in the Sanctuary are malabar pied hornbill (*Anthracoceros coronatus*), grey junglefowl (*Gallus sonneratii*), shikra (*Accipiter badius*), Indian cuckoo (*Cuculus micropterus*), Sri Lanka frogmouth (*Batrachostomus moniliger*), brahminy kite (*Haliastur indus*), green imperial-pigeon (*Ducula aenea*), Asian koel (*Eudynamis scolopacea* spp), grey heron (*Ardea cinerea*), Malabar trogon (*Harpactes fasciatus*), black kite (*Milvus migrans*), Malabar parakeet (*Psittacula columboides*), Malabar grey hornbill (*Ocyrceros griseus*), great hornbill (*Buceros bicornis*), black drongo (*Dicrurus macrocercus*), Malabar pit viper (*Trimereus malabaricus*), cobra (*Naja naja*), king cobra (*Ophiophagus hannah*), Indian python (*Puthon molurus*), Indian rat snake (*Ptyas mucosus*), Nilgiri keelback (*Hebius beddomei*), common Indian monitor (*Varanus benghalensis*), mountain day gecko (*Cnemaspis monticola*), narrow-mouthed frog (*Microhyla* sp.), ornate narrow-mouthed frog (*Microhyla ornate*), Jerdon's narrow mouthed frog (*Ramanella montana*), common Indian toad (*Duttaphrynus melanostictus*), Malabar tree toad (*Pedostibes tuberculosus*), Indian frog (*Indirana* sp.), golden frog (*Hylarana aurantiaca*), etc;

**AND WHEREAS**, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Kottiyoor Wildlife Sanctuary which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

**NOW, THEREFORE**, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of Section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from 0 (zero) to 2.1 kilometres around the boundary of Kottiyoor Wildlife Sanctuary, in Kannur district in the State of Kerala as the Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

- 1. Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone.** – (1) The Eco-sensitive Zone shall be to an extent of 0 (zero) to 2.1 kilometres around the boundary of Kottiyoor Wildlife Sanctuary and the area of the Eco-

sensitive Zone is 12.91 square kilometres. The extent of Eco-sensitive Zone at various direction are given as:

Direction	Extents (kilometers)
North	0 kilometers
North - East	2.1 kilometers
East	1 kilometers
South - East	1 kilometers
South	1 kilometers
South - West	1 kilometers
West	0 kilometers
North - West	0 kilometers

*Zero extent of Eco-sensitive Zone towards the North, North-west and West sides of Kottiyoor Wildlife Sanctuary are due to bordering with the Aralam Wildlife Sanctuary of Kerala.*

- (2) The boundary description of Kottiyoor Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I**.
  - (3) The maps of the Kottiyoor Wildlife Sanctuary demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA**, **Annexure-IIB**, and **Annexure-IIC**.
  - (4) List of geo-coordinates of the boundary of Kottiyoor Wildlife Sanctuary and Eco-sensitive Zone are given in Table **A** and Table **B** of **Annexure III**.
  - (5) The list of villages falling in the proposed Eco-sensitive Zone along with their geo co-ordinates at prominent points is appended as **Annexure-IV**.
- 2. Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.**-(1) The State Government shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification for approval of the competent authority of State.
- (2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
  - (3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the State Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan:-
    - (i) Environment;
    - (ii) Forest and Wildlife;
    - (iii) Agriculture;
    - (iv) Revenue;
    - (v) Urban Development;
    - (vi) Tourism;
    - (vii) Rural Development;
    - (viii) Irrigation and Flood Control;
    - (ix) Municipal;
    - (x) Panchayati Raj;
    - (xi) Local Self Government Department (LSGD);
    - (xii) Kerala State Pollution Control Board; and
    - (xiii) Public Works Department.
  - (4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.
  - (5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management,

soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.

- (6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.
- (7) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.
- (8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
- (9) The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.

**3. Measures to be taken by the State Government.-** The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-

- (1) **Land use.**— (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purposes other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or State Government as applicable and *vide* provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:-

- (i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;
- (ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
- (iii) small scale industries not causing pollution;
- (iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
- (v) promoted activities given under paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the State Government and without compliance of the provisions of Article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.

- (b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.
- (2) **Natural water bodies.**—The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.
- (3) **Tourism or Eco-tourism.**— (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.

- (b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by the State Department of Tourism in consultation with State Departments of Environment and Forests.
- (c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.
- (d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone.
- (e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-

- (i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

- (ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;
  - (iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.
- (4) **Natural heritage.**- All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.
- (5) **Man-made heritage sites.**- Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.
- (6) **Noise pollution.** - Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.
- (7) **Air pollution.**- Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be compiled in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.
- (8) **Discharge of effluents.**- Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by State Government whichever is more stringent.
- (9) **Solid wastes.**- Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-
- (a) the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357 (E), dated the 8<sup>th</sup> April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;
  - (b) safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.
- (10) **Bio-Medical Waste.**- Bio-Medical Waste Management shall be as under:-
- (a) the Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India

in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 343 (E), dated the 28<sup>th</sup> March, 2016.

(b) safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.

- (11) **Plastic waste management.**- The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18<sup>th</sup> March, 2016, as amended from time to time.
- (12) **Construction and demolition waste management.**- The construction and demolition waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29<sup>th</sup> March, 2016, as amended from time to time.
- (13) **E-waste.**- The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.
- (14) **Vehicular traffic.**- The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.
- (15) **Vehicular pollution.**- Prevention and control of vehicular pollution shall be in compliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.
- (16) **Industrial units.**- (i) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.  
(ii) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.
- (17) **Protection of hill slopes.**- The protection of hill slopes shall be as under:-  
(a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;  
(b) construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall not be permitted.
- 4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.**- All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made there under including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

**TABLE**

<b>S. No.</b> (1)	<b>Activity</b> (2)	<b>Description</b> (3)
<b>A. Prohibited Activities</b>		
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses and for

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
		<p>manufacture of country tiles or bricks for housing and for personal consumption;</p> <p>(b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4<sup>th</sup> August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21<sup>st</sup> April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.</p>
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	<p>New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted:</p> <p>Provided that non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless otherwise specified in this notification and in addition the non-polluting cottage industries shall be promoted.</p>
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
<b>B. Regulated Activities</b>		
8.	Commercial establishment of hotels and resorts.	<p>No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities:</p> <p>Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.</p>
9.	Construction activities.	<p>(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the protected area or upto extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:</p> <p>Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities mentioned in subparagraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents.</p>

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
		<p>Provided further that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any.</p> <p>(b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.</p>
10.	Small scale non polluting industries.	Non polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
11.	Felling of trees.	<p>(a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the Competent Authority in the State Government.</p> <p>(b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.</p>
12.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce.	Regulated as per the applicable laws.
13.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws (underground cabling may be promoted).
14.	Infrastructure including civic amenities.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulations available guidelines.
15.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
16.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
17.	Protection of hill slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
18.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
19.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted as per the applicable laws for use of locals.
20.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.	Regulated (except otherwise provided) as per the applicable laws except for meeting local needs.



<b>S. No.</b> <b>(1)</b>	<b>Activity</b> <b>(2)</b>	<b>Description</b> <b>(3)</b>
21.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
22.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated as per the applicable laws.
23.	Establishment of solid waste disposal site and common incineration facility for solid and bio medical waste.	Regulated as per the applicable laws.
24.	Solid waste management.	Regulated as per the applicable laws.
25.	Open well, Bore well etc. for agriculture or other usage.	Regulated and the activity should be strictly monitored by the appropriate authority.
26.	Introduction of exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
28.	Use of polythene bags.	Regulated as per the applicable laws.
29.	Commercial sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.
<b>C. Promoted Activities</b>		
30.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
31.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
32.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
33.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
34.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light etc. shall be actively promoted.
35.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
36.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.
37.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
38.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
39.	Restoration of degraded land/ forests/ habitat.	Shall be actively promoted.
40.	Environmental awareness.	Shall be actively promoted.

**5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification.-** For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:—

S N	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
(i)	District Collector Kannur or his representative	Chairman, ex officio
(ii)	Representative of District Collector Wayanad	Member;
(iii)	Member of the Legislative Assembly (MLA), Peravoor	Member;
(iv)	District Panchayat President, Kannur	Member;
(v)	Representative of the Dept. of Environment, Govt. of Kerala	Member;
(vi)	Representative of Non-governmental Organizations working in the field of natural conservation (including heritage conservation) to be nominated by the Government of Kerala	Member;
(vii)	Kerala State Pollution Control Board, District Officer, Kannur	Member;
(viii)	Member State Biodiversity Board	Member;
(ix)	The Wildlife Warden, Aralam	Member-Secretary.

**6. Terms of reference.** – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

- (2) The tenure of the Monitoring committee shall be for three years or till the re-constitution of the new Committee by the State Government and subsequently the Monitoring Committee shall be constituted by the State Government.
  - (3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14<sup>th</sup> September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.
  - (4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forest number S.O. 1533 (E), dated the 14<sup>th</sup> September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.
  - (5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.
  - (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
  - (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31<sup>st</sup> March of every year by the 30<sup>th</sup> June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at Annexure V.
  - (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.
- 7.** The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.
- 8.** The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/101/2015-ESZ-RE]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

## ANNEXURE- I

**A. BOUNDARY DESCRIPTION OF KOTTIYOOR WILDLIFE SANCTUARY  
IN THE STATE KERALA**

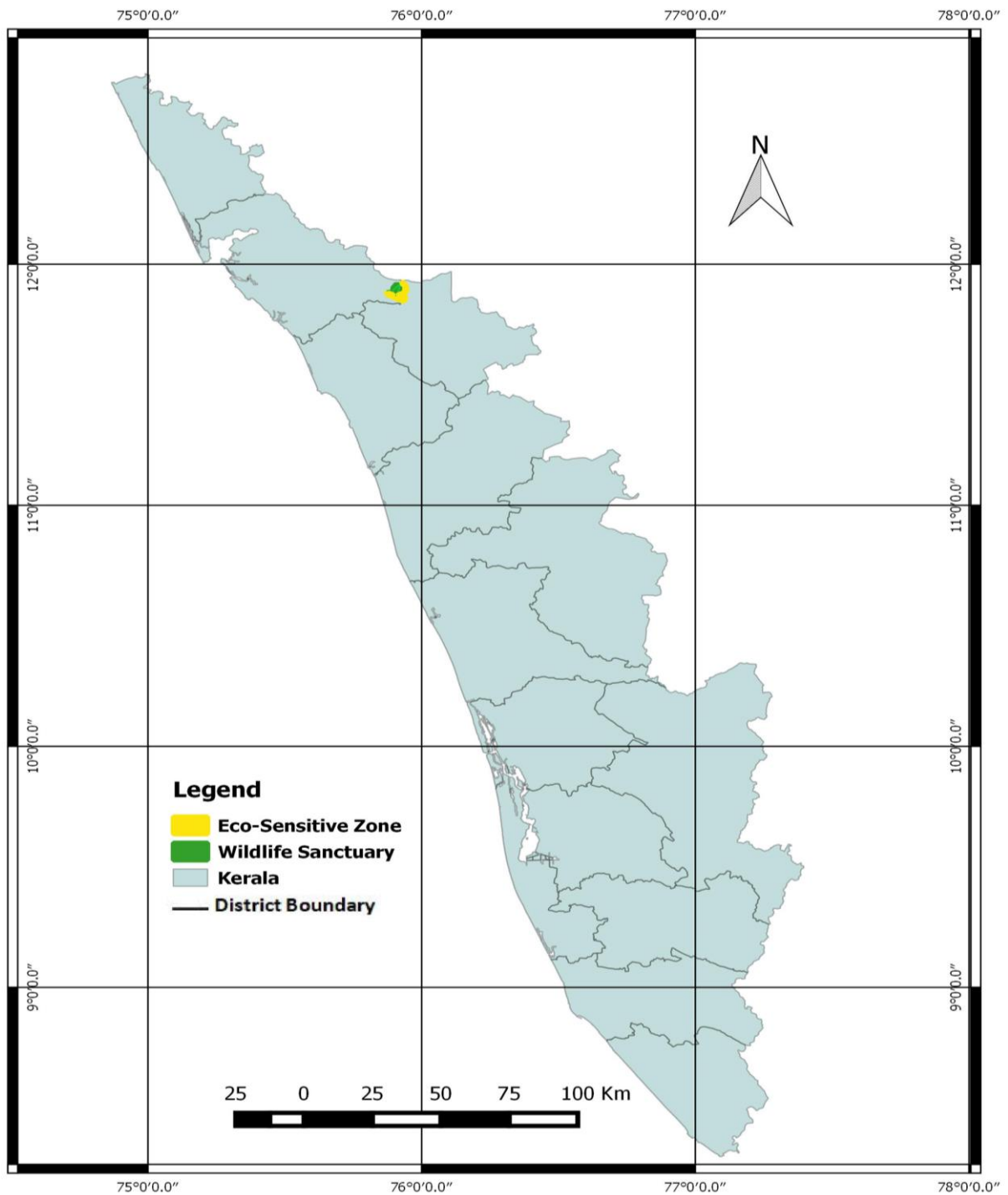
<b>East</b>	Starting from the eastern most common point of Kottiyoor and Hill Dale Reserve Forest then towards South along the Eastern boundary of Kottiyoor Reserve Forest up to South-East corner of Kottiyoor Reserve Forest.
<b>South</b>	Southern boundary of Kottiyoor Reserve Forest.
<b>West</b>	Along the western boundary of Kottiyoor Reserve Forest excluding Teak and Softwood Plantations up to the point where it meets Aralam Wildlife Sanctuary then along the Eastern boundary of Aralam Wildlife Sanctuary to the crest point at 1374 m elevation.
<b>North</b>	Then along the southern boundary of Aralam Wildlife Sanctuary eastward up to the point where it meets Hill Dale Reserve Forest then along common boundary of Kottiyoor Reserve Forest and Hill Dale Reserve Forest up to the starting point.

**A. BOUNDARY DESCRIPTION OF ECO-SENSITIVE ZONE AROUND KOTTIYOOR  
WILDLIFE SANCTUARY IN THE STATE KERALA**

<b>North</b>	Towards the north is Aralam Wildlife Sanctuary. Zero width Eco-sensitive Zone along the border of Aralam WLS and Kottiyoor WLS for about 3 Kilometer (11°54'38.89"N, 75°54'0.14"E - 11°55'6.81"N, 75°55'31.91"E).
<b>North-East</b>	Starting from the point where Kottiyoor Wildlife Sanctuary meets Aralam Wildlife Sanctuary and moves along the boundary of Hilldale Reserve Forest and Reserve Forests of North Wayanad for about 2 Kilometer with the width of Eco-sensitive Zone being 2.1 Kilometer.
<b>East</b>	The eastern side moves along the Protected Area's border with reserve forests of North Wayanad for around 3.5 Kilometer till it reach near Irattamudi region of the sanctuary. The width of the Eco-sensitive Zone is 1 Kilometer here.
<b>South-East</b>	From the Irattamudi region the Eco-sensitive Zone with a width of 1 kilometer continues till it meet the Southern point of Kottiyoor Wildlife Sanctuary.
<b>South</b>	The Southern side borders with Bavalipuzha from Melepalchuram to Thazhe Ambayathodu for 4.26 Kilometer with the Eco-sensitive Zone width being 1 kilometer (11°50'36.74"N, 75°54'44.94"E - 11°51'38.65"N, 75°52'39.29"E)
<b>South-West</b>	Teak and Softwood plantation having extent of 137 ha to a distance of 3.150 Kilometer from Kandappunam to Panniyamala with the ESZ width being 1 kilometer.
<b>West</b>	Starts at the boundary of Chavachi section of Aralam Wildlife Sanctuary at 11°53'23.05"N, 75°53'32.44"E and extends up to 1 Kilometer till 11°53'53.07"N, 75°53'37.55"E along the shared boundary of both sanctuaries. The width of ESZ is zero here.
<b>North-West</b>	This side goes along the boundary of Chavachi Section of Aralam Wildlife Sanctuary for 1.6 Kilometer where the width of Eco-sensitive Zone is zero (11°53'53.07"N, 75°53'37.55"E - 11°54'38.89"N, 75°54'0.14"E).

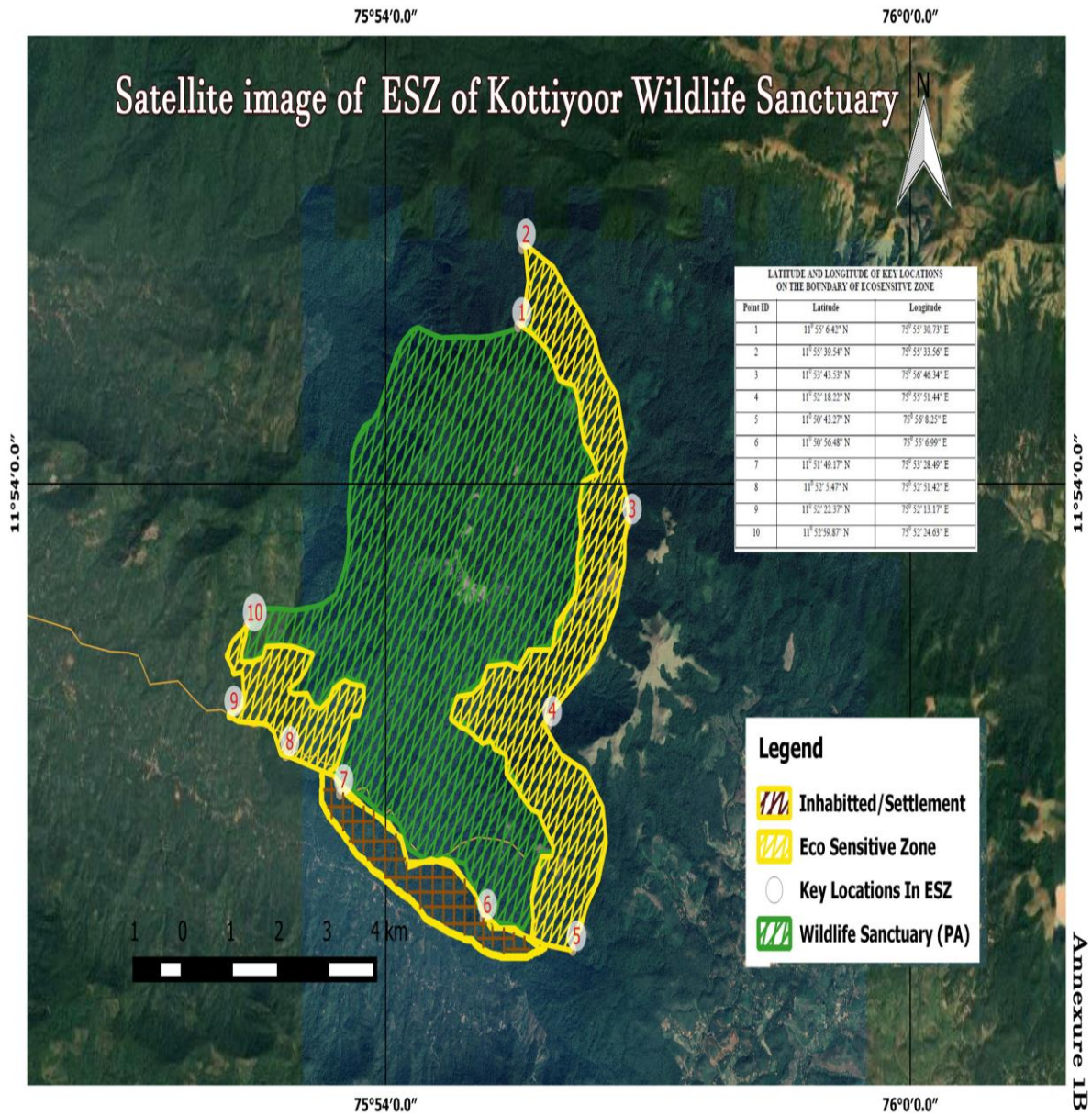
ANNEXURE- IIA

LOCATION MAP OF KOTTIYOOR WILDLIFE SANCTUARY AND ITS ECO-SENSITIVE ZONE ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



**ANNEXURE- IIB**

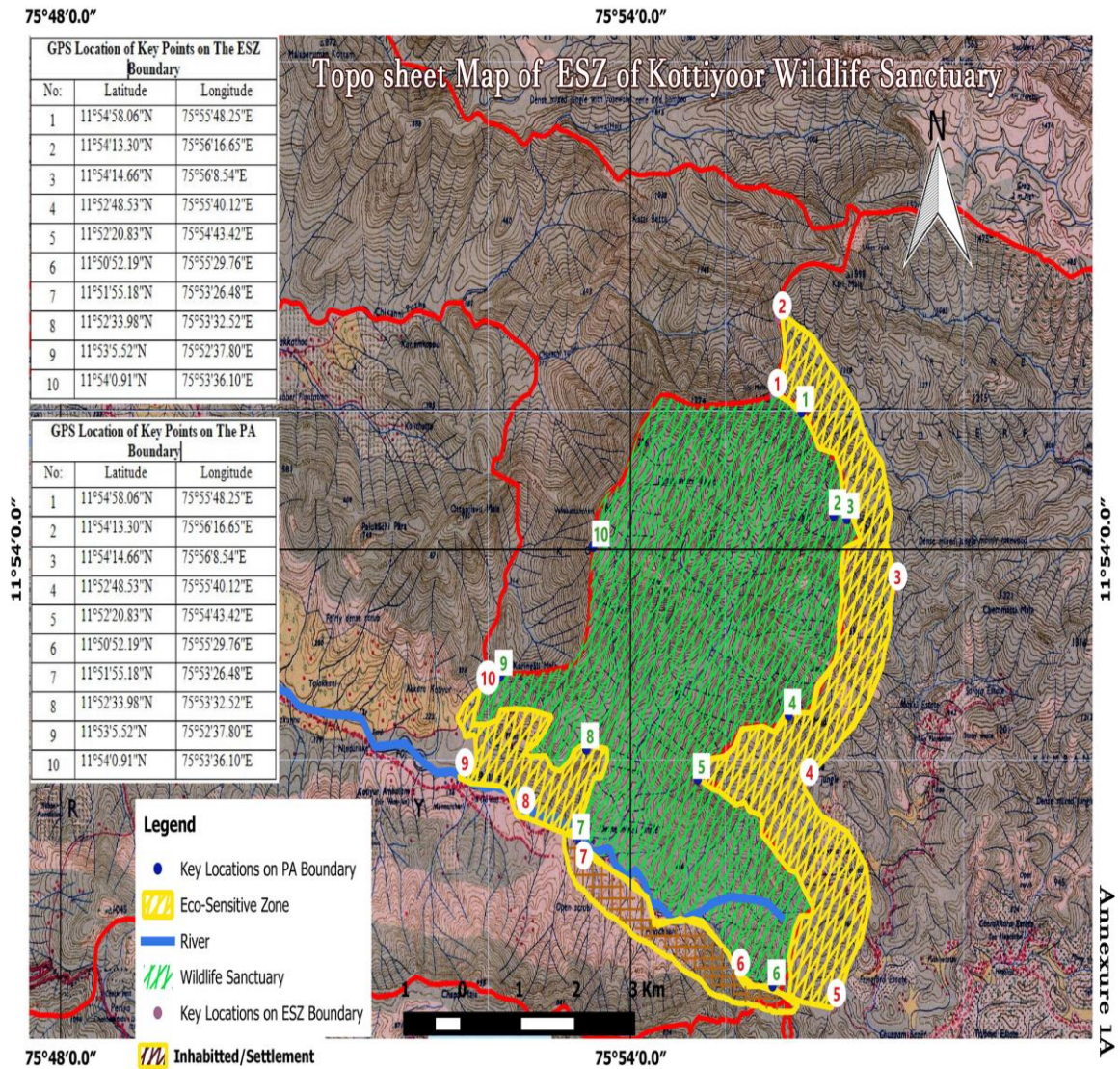
**GOOGLE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF KOTTIYOOR WILDLIFE SANCTUARY  
ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**





ANNEXURE- IIC

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF KOTTIYOOR WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS ON SURVEY OF INDIA (SOI) TOPOSHEET



## ANNEXURE-III

**TABLE A: GEO- COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF KOTTIYOOR WILDLIFE SANCTUARY**

Sl. No.	Name	Direction	Latitude	Longitude
1	Ithimala	N	11°54'58.06"N	75°55'48.25"E
2	Sooryamudi	NE	11°54'13.30"N	75°56'16.65"E
3	Sooryamudi 2	NE	11°54'14.66"N	75°56'8.54"E
4	Irattamudi	E	11°52'48.53"N	75°55'40.12"E
5	Cherimudi	SE	11°52'20.83"N	75°54'43.42"E
6	Mele Palchuram	SE	11°50'36.74"N	75°54'44.94"E
7	Thazhe Ambayathode	S	11°51'38.65"N	75°52'39.29"E
8	Anjili murichidam mele	SW	11°53'5.52"N	75°52'37.80"E
9	Kottiyoor Chavachi Boundary	W	11°54'0.91"N	75°53'36.10"E

**TABLE B: GEO-COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE**

Sl. No.	Name	Direction	Latitude	Longitude
1	Ithimala	N	11°55'6.42"N	75°55'30.73"E
2	Ambalappara trekpath	N	11°55'39.54"N	75°55'33.56"E
3	Below Sooryamudi	E	11°53'43.53"N	75°56'46.34"E
4	Below Cherimudi	SE	11°52'18.22"N	75°55'51.44"E
5	Valad Mele kaadu	SE	11°50'43.27"N	75°56'8.25"E
6	Melepalchuram	SE	11°50'23.39"N	75°55'17.69"E
7	Ambayathode	S	11°51'49.17"N	75°53'28.49"E
8	Fencing	SW	11°52'5.47"N	75°52'51.42"E
9	Near Kottiyoor Temple	SW	11°52'22.37"N	75°52'13.17"E
10	Anjili murichidam	SW	11°52'59.87"N	75°52'24.63"E

**ANNEXURE-IV****LIST OF VILLAGES COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE OF KOTTIYOOR WILDLIFE  
SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES**

<b>Sl. No.</b>	<b>Name</b>	<b>Taluk</b>	<b>District</b>	<b>Latitude</b>	<b>Longitude</b>
<b>1</b>	Kottiyoor	Thalassery	Kannur	11°51'19.85"N	75°54'14.05"E
<b>2</b>	Kelakam	Thalassery	Kannur	11°52'43.29"N	75°52'10.91"E
<b>3</b>	Thirunelli	Mananthavady	Wayanad	11°55'15.12"N	75°56'13.54"E



**ANNEXURE –V****Performa of Action Taken Report:-**

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.